ग्रामीण भारत में खेल प्रतिभा को बढ़ावा

ग्रामीण क्षेत्रों में खेल के बुनियादी ढांचे के निर्माण और उन्नयन के लिए सरकार की प्रतिबद्धता न केवल एथलीटों को सशक्त बना रही है बल्कि शहरी-ग्रामीण विभाजन को पाटने के साथ-साथ समुदायों के कल्याण को भी बढ़ावा दे रही है। नशीली दवाओं के सेवन के विरुद्ध ये प्रयास महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये ग्रामीण युवाओं को एक रचनात्मक और उद्देश्यपूर्ण मार्ग प्रदान करते हैं, जिससे उनकी ऊर्जा स्वस्थ और अधिक संतुष्टिदायक कार्यों की ओर उन्मुख होती है।

-अनुराग ठाकुर

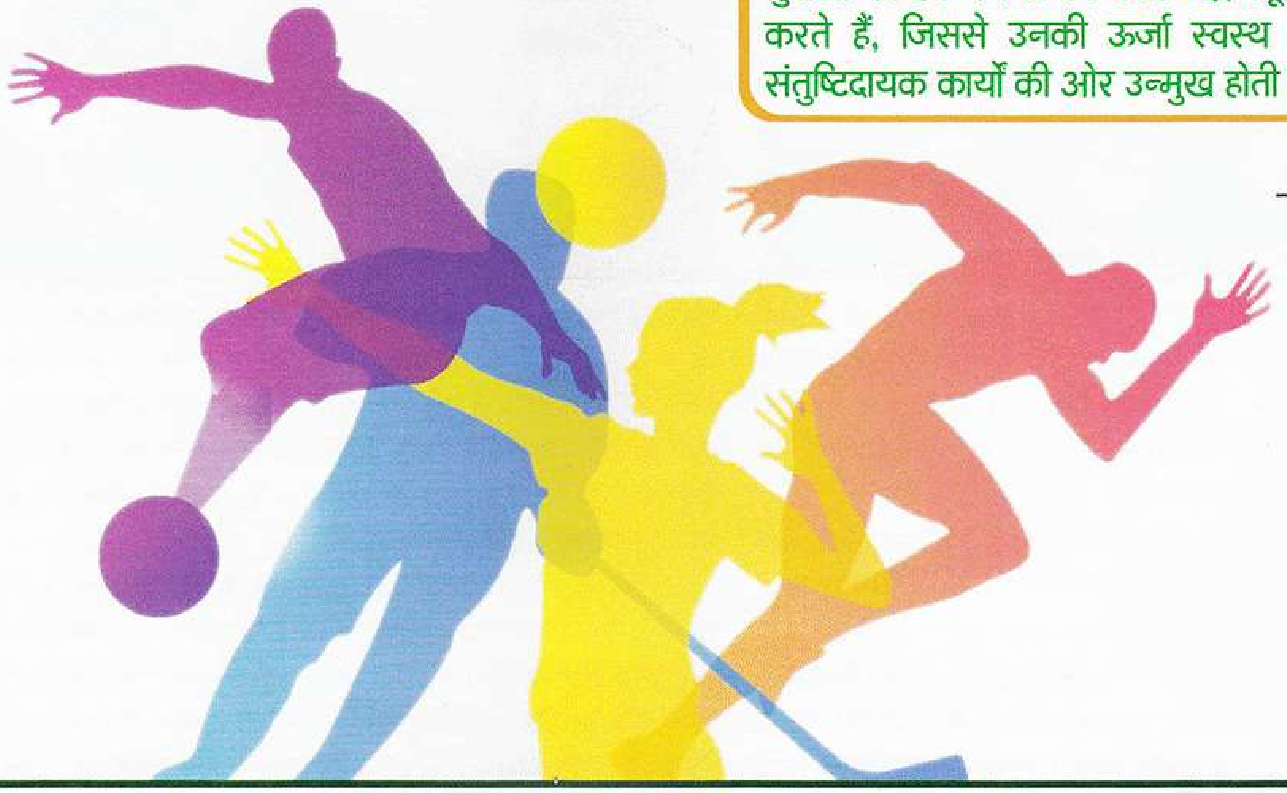

कुछ सप्ताह पहले ही देश एक अत्यधिक दुर्लभ और विशिष्ट उपलब्धि का साक्षी बना। एशियाई खेलों के दबाव के बीच, पारुल चौधरी ने अपने जीवन की सबसे निर्णायक 30 मीटर दौड़ का सामना किया। जापान की शीर्ष धाविका रिरिका हिरोनाका से पीछे चल रही पारुल ने, पिछले दिन की दौड़ की थकान हावी होने के बावजूद, अप्रत्याशित प्रदर्शन किया। इस हृदयस्पर्शी क्षण में, उन्होंने हिरोनाका को पछाड़ दिया और 5000 मीटर दौड़ में न केवल स्वर्ण पदक अपने नाम किया बल्कि इतिहास में भी अपनी जगह बना ली। यह पारुल का खेलों में दूसरा पदक था, एक ऐसी उपलब्धि जो उन्हें खेल के इतिहास में प्रेरणा की किरण के रूप में अमर कर देगी।

28 वर्षीय एथलीट पारुल उत्तर प्रदेश की रहने वाली हैं और उनके पिता मेरठ के पास इकलौता गाँव के एक छोटे किसान हैं। पारुल हमेशा से ही ट्रैक पर फाइटर रही हैं, 2011 में छोटी उम्र में ही वह अपने स्कूल में नंगे पैर दौड़ीं और 800 मीटर की दौड़ में भाग लिया। बाद में उन्होंने 1500 मीटर तथा 3000 मीटर दौड़ और फिर 5000 मीटर की दौड़ में भाग लेने का फैसला किया। यह इस बात का प्रमाण है कि ग्रामीण भारत उनके जैसी असाधारण प्रतिभाओं का पॉवरहाउस रहा है। हाल के वर्षों में भारत सरकार ने भारत को एक खेल राष्ट्र के रूप में विकसित करने के लिए *खेलो इंडिया योजना, टॉप्स* (टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम) *योजना* आदि जैसी कई पहल की हैं जिनमें ग्रामीण क्षेत्रों पर विशेष जोर दिया गया है।

ग्रामीण भारत में खेल

भारत में खेल लंबे समय से रोजमर्रा की जिंदगी का प्रमुख हिस्सा रहे हैं। भारत में संपन्न खेलों की उपस्थिति का समर्थन करने के लिए कई प्रमाण मौजूद हैं। हमारे रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में तीरंदाजी, कुश्ती, घुड़सवारी और रथदौड़ सहित खेलों के कई उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए तीरंदाज़ी हमेशा से एक बहुत लोकप्रिय खेल रहा है, जिसका इतिहास महाभारत काल से है; यह उस काल के प्रमुख युद्ध कौशलों में से एक था। परशुराम, द्रोण और अग्निवेश जैसे प्रतिष्ठित शिक्षकों ने तीरंदाज़ी

लेखक केंद्रीय युवा कार्यक्रम तथा खेल और सूचना एवं प्रसारण मंत्री, भारत सरकार हैं। ई-मेल : *office-moyas@gov.in*

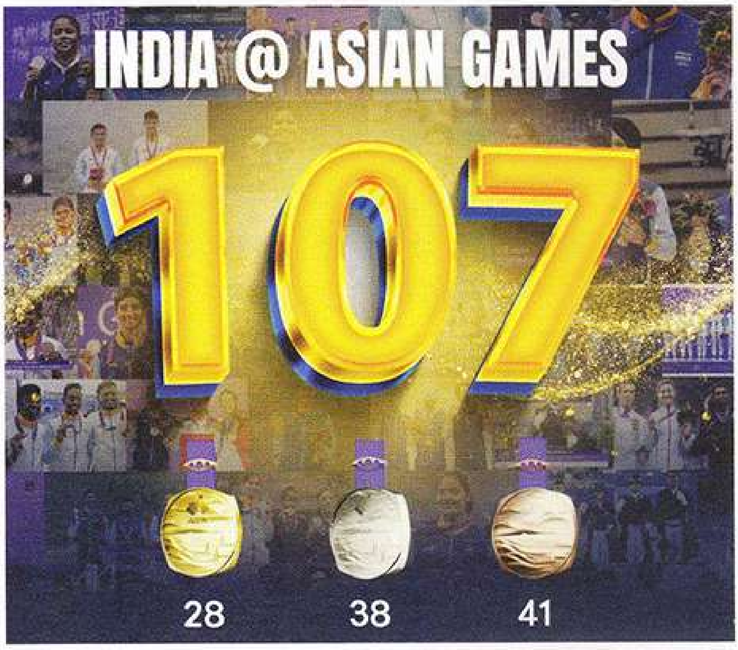

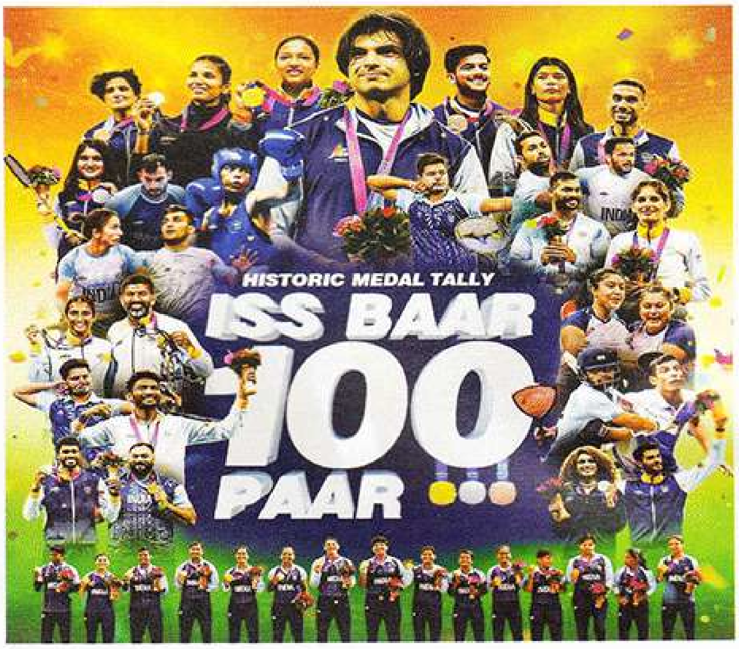

को उच्चतम स्तर तक पहुँचाया और अपने छात्रों को अर्जुन की तरह प्रशिक्षित किया जो उत्कृष्ट तीरंदाज बन गए। हमारे देश को विश्व चैम्पियनशिप, राष्ट्रमंडल खेल और एशियाई खेलों जैसी अंतरराष्ट्रीय स्तर की कई प्रतियोगिताओं में उल्लेखनीय जीत हासिल हुई है।

तीरंदाज़ी की दुनिया में हुई सबसे बड़ी घटनाओं में से एक महिला तीरंदाज़ों का उद्भव और विकास है। हाल ही में एशियाई खेल 2022 में महिला तीरंदाज़ों ने 3 स्वर्ण पदक और 2 कांस्य पदक जीत कर हमारे देश को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया। ग्रामीण भारत की ये युवा लड़कियाँ और महिलाएँ उनके लिए रोल मॉडल हैं, जो उनके जैसी हैं, समान पृष्ठभूमि से आती हैं और सफल होने के लिए चुनौतियों का सामना करती हैं। इन महिला तीरंदाजों ने पितृसत्ताओं के दृष्टिकोण को बदल दिया है, कई लैंगिक समानता की पैरोकार बन गई हैं और खेलों में लड़कियों को बढ़ावा दे रही हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों को मज़बूत करने की पहल

भारत सरकार ने यह समझते हुए कि खेल में उत्कृष्टता की क्षमता की कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती, ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों को बढ़ावा देने के लिए एक सतत अभियान आरंभ किया है। हाल के वर्षों में किए गए प्रयास, ग्रामीण भारत में खेल की संस्कृति को बढ़ावा देने की सरकार की प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं।

केंद्र सरकार की प्रमुख योजनाओं में से एक है- *खेलो इंडिया योजना*, जिसे युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा अपने पांच ऐसे कार्यक्षेत्रों के माध्यम से कार्यान्वित किया जा रहा है जो ग्रामीण क्षेत्रों सहित पूरे देश में खेलों को बढ़ावा देते हैं। खेलो इंडिया राष्ट्रीय स्तर पर खेल कौशल का प्रदर्शन करने और प्रतिभा तलाशने का बुनियादी मंच है। यह गुणी और प्रतिभाशाली बच्चों को उत्कृष्टता हासिल करने के लिए आगे बढ़ने का रास्ता दिखाता है। इस योजना के 'टैलेंट सर्च एंड डेवलपमेंट' घटक के तहत, खेलो इंडिया एथलीटों की पहचान की जाती है, उनका चयन किया जाता है और प्रति एथलीट प्रति वर्ष 6.28 लाख रुपये की वार्षिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, जिसमें 1.20 लाख आउट ऑफ पॉकेट भत्ता और 5.08 लाख रुपये में अन्य सुविधाएं जैसे कोचिंग, खेल विज्ञान सहायता, आहार, उपकरण, उपभोग्य वस्तुएं, बीमा शुल्क आदि शामिल हैं।

यह योजना उभरते खिलाड़ियों को राष्ट्रव्यापी मंच प्रदान करके इनका पथ-प्रदर्शन भी करती है। युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय प्रासंगिक राष्ट्रीय खेल महासंघों, स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया और भारतीय विश्वविद्यालय संघ जैसे विश्वविद्यालय खेल प्रोत्साहन संगठनों के सहयोग से, राष्ट्रीय स्तर की बहु-खेल प्रतियोगिताओं जैसे खेलो इंडिया, यूथ गेम्स, खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स और खेलो इंडिया विंटर गेम्स का आयोजन करता है। मंत्रालय जल्द ही *खेलो इंडिया पैरा गेम्स* का आयोजन करने जा रहा है।

देश भर में खेले जाने वाले कई स्वदेशी खेल हैं जो हमारी सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग हैं। ये स्वदेशी खेल, जो कभी क्षेत्रीय ग्रामीण इलाकों तक ही सीमित थे, अब *खेलो इंडिया* योजना की बदौलत पहचान हासिल कर चुके हैं और मुख्यधारा में आ गए हैं। *खेलो इंडिया योजना* का विशेष बल 'ग्रामीण, स्वदेशी और जनजातीय खेलों को बढ़ावा देने' पर है, ताकि इन खेलों को लोकप्रिय बनाया जा सके, जानकारी का प्रसार किया जा सके और इन खेलों के बारे में वर्तमान पीढ़ी की जिज्ञासा को बढ़ाया जा सके।

बच्चों और युवाओं को इन खेलों को प्रमुखता से अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने पर भी ज़ोर दिया गया है, जिससे उनके मुख्यधारा में आने का मार्ग प्रशस्त हो सके। इस पहल के माध्यम से मल्लखंब, कलारीपयट्टु, गतका, थांग-ता, योगासन और सिलंबम जैसे खेलों को बढ़ावा देने के लिए पहचाना गया है और उन्हें एक राष्ट्रीय मंच मिला है, जो देश भर के खेल प्रेमियों का

ध्यान आकर्षित कर रहा है। बुनियादी ढांचे के विकास, उपकरण सहायता, प्रशिक्षकों की नियुक्ति, प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण और छात्रवृत्ति के लिए अनुदान सहायता दी जाती है। इसके अलावा, हाल ही में आयोजित खेलो इंडिया गेम्स में मल्लखंब, कलारीपयट्टू, गतका, थांग-ता और योगासन को भी शामिल किया गया।

युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय ने भारतीय खेल प्राधिकरण के ज़रिए यानी राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (एनसीओई), एसएआई प्रशिक्षण केंद्र (एसटीसी), एसटीसी का विस्तार केंद्र, राष्ट्रीय खेल प्रतिभा प्रतियोगिता (एनएसटीसी) - [नियमित स्कूलों, स्वदेशी खेलों और मार्शल आर्ट (आईजीएमए) स्कूल और अखाड़ों के लिए अपनी उप-योजनाओं के साथ] के माध्यम से देश भर में विभिन्न खेल प्रोत्साहन योजनाएं लागू की हैं जिससे विशेषज्ञ प्रशिक्षकों, खेल उपकरण, भोजन और आवास, खेल किट, प्रतियोगिता प्रदर्शन, शैक्षिक व्यय, चिकित्सा/बीमा और वज़ीफा जैसी सेवाएं प्रदान की जाती हैं। इन योजनाओं में शामिल विषयों में पारंपरिक भारतीय खेल जैसे कबड्डी, तीरंदाजी, कुश्ती, खो-खो आदि शामिल हैं।

इसके अलावा, प्रदर्शन और प्रचार/पुनरुद्धार करने के लिए, इस मंत्रालय ने विभिन्न स्वदेशी खेलों जैसे गतका, रोल बॉल, टग ऑफ वॉर, कलारीपयट्टू, थांग-ता, खो-खो, मल्लखंब, शूटिंग बॉल, स्क्वे, कबड्डी, गिल्ली डंडा, सिक्किम तीरंदाज़ी, धूप खेल और कौड़ी खेल, छाऊ और पाइका अखाड़ा, अखाड़ा कुश्ती, हेक्को, मिज़ोरम खेल, सिलंबम, लागोरी और लंगड़ी के वृत्तचित्र भी बनाए हैं। वृत्तचित्रों को 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' वेबसाइट के डिजिटल भंडार, फिट इंडिया मूवमेंट के फेसबुक पेज और यूट्यूब चैनल और MyGov India के यूट्यूब चैनल पर अपलोड किया गया है।

भारत की बेटियां नम्बर 1 से कम पर समझौता करने के लिए तैयार नहीं है और यही नये भारत की भावना और शक्ति है।

PM Modi while interacting with contingent of Indian Athletes who participated in the Asian Games Oct 10 2023

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोकसभा और राज्यसभा के सांसदों को अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में इंडोर और आउटडोर खेल कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला आयोजित करने की पहल करने के लिए प्रोत्साहित किया है और इन पहलों को सांसद खेल महोत्सव और सांसद खेल महाकुंभ के रूप में ब्रांड किया गया है। उनके आह्वान का उद्देश्य पूरे देश में एक जीवंत खेल संस्कृति को बढ़ावा देना और उसको समृद्ध बनाना है। ऐसी गतिविधियों पर जोर देना माननीय प्रधानमंत्री की खेल को हमारे देश के लोकाचार का एक अभिन्न अंग बनाने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है जिनसे न केवल शारीरिक फिटनेस बल्कि नागरिकों के बीच खेल भावना और प्रतिस्पर्धा की भावना को भी बढ़ावा मिलता है। सांसदों द्वारा किए गए इन प्रयासों ने स्थानीय प्रतिभाओं को सशक्त बनाने

एशियाई खेल 2022 में ज्योति सुरेखा वेन्नम ने तीरंदाज़ी में तीन गोल्ड मेडल जीते।

> “युवा पीढ़ी अक्सर एक टर्म G.O.A.T. (Greatest of All Time) का इस्तेमाल करती है और आप सभी
> **वास्तव में हमारे देश के लिए G.O.A.T. है।**
> आप सभी **Greatest Of All Time** है।”

PM Modi while interacting with contingent of Indian Athletes who participated in the Asian Games, Oct 10, 2023

और युवाओं को खेलों में उत्कृष्टता हासिल करने के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है, जिससे एक स्वस्थ एवं अधिक सक्रिय भारत के निर्माण में योगदान मिला है।

उदाहरण के तौर पर सांसद खेल महाकुंभ का दूसरा चरण इसी साल जनवरी महीने में उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में हुआ था। इस खेल आयोजन में कई प्रकार की प्रतियोगिताएं शामिल थीं जिनमें कुश्ती, कबड्डी, खो-खो, बास्केटबॉल, फुटबॉल, हॉकी, वॉलीबॉल, हैंडबॉल, शतरंज, कैरम, बैडमिंटन और टेबल टेनिस जैसे इंडोर और आउटडोर खेल शामिल थे। इन खेलों के अलावा, निबंध लेखन, पेंटिंग और रंगोली बनाने जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में भी प्रतियोगिताएं हुईं।

ये खेल न केवल शारीरिक फिटनेस बल्कि रचनात्मकता और बौद्धिक कौशल को भी बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में काम करते हैं। निबंध लेखन, पेंटिंग और रंगोली बनाने जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से, प्रतिभागियों को ग्रामीण युवाओं के बीच अपनी कलात्मक और साहित्यिक प्रतिभा दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इन विविध प्रतियोगिताओं का उद्देश्य युवाओं के बीच समग्र विकास दृष्टिकोण को बढ़ावा देना तथा हितों के व्यापक स्पेक्ट्रम को शामिल करना है, जहां वे, खेल और रचनात्मक प्रयासों, दोनों में उत्कृष्टता हासिल कर सकते हैं। यह पहल देश के सभी हिस्सों में प्रतिभावान व्यक्तियों को प्रोत्साहन देने और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा तथा अभिव्यक्ति की संस्कृति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

खेल अवसंरचना के विकास पर ज़ोर

खेल भारत के समग्र विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। वर्तमान में खेलों के लिए उपलब्ध बुनियादी ढांचे में सुधार करना या नया निर्माण करना केंद्र सरकार का प्रमुख फोकस क्षेत्र है। एथलेटिक प्रतियोगिताओं के मैदान के अतिरिक्त, ये सुविधाएं सशक्तीकरण, एकता और अवसर का केंद्र बन जाती हैं। वे युवा प्रतिभाओं को आवश्यक संसाधनों और प्रशिक्षण तक पहुँच प्रदान करते हैं जिससे वे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हो सकें। इसके अलावा, खेल का बुनियादी ढांचा शारीरिक फिटनेस और कल्याण की संस्कृति को बढ़ावा देता है, जिससे इन क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों की व्यापकता कम हो जाती है। दूरदराज के क्षेत्रों में खेल के बुनियादी ढांचे में निवेश करके, हम न केवल खेल प्रतिभाओं का पोषण करते हैं, बल्कि स्वस्थ और अधिक जीवंत समुदायों का निर्माण भी करते हैं, शहरी-ग्रामीण विभाजन को पाटते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे देश का हर भाग खेलों से लाभान्वित हो सके।

खेल के बुनियादी ढांचे का निर्माण और उन्नयन *खेलो इंडिया योजना* का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसका उद्देश्य पूरे देश में खेल के बुनियादी ढांचे में समग्र परिवर्तन करना है। शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में खेल के बुनियादी ढांचे के विकास के लिए फंड आवंटित किए जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, मेडक ज़िले में 5.47 करोड़ रुपये की लागत से एक सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक का निर्माण किया गया है जो उत्तरी तेलंगाना में स्थित है। इससे क्षेत्र के स्थानीय एथलीटों को सशक्त बनाने में काफी मदद मिलेगी। इसी प्रकार, राजस्थान के झुंझुनू ज़िले में एक बहूद्देश्यीय हॉल 8 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है जिससे ग्रामीण राजस्थान में ज़मीनी स्तर पर खेल संस्कृति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। वर्ष 2016-17 से, पूरे देश में खेल बुनियादी ढांचे को सुलभ बनाने के लिए खेलो इंडिया योजना के 'खेल बुनियादी ढांचे के निर्माण और उन्नयन' वर्टिकल के तहत लगभग 2741 करोड़ रुपये की मंजूरी दी गई है।

संतोषजनक वित्तीय प्रतिबद्धता देश भर में एथलीटों और उत्साही लोगों के लिए शीर्ष स्तर की सुविधाएं प्रदान करने के प्रति सरकार के समर्पण को दर्शाती है। इस तरह के निवेश से न केवल खेल के बुनियादी ढांचे में सुधार होता है बल्कि समग्र खेल पारिस्थितिकी तंत्र में भी सुधार होता है। यह विश्वस्तरीय स्टेडियमों, स्विमिंग पूल, प्रशिक्षण केंद्रों, एथलेटिक ट्रैक और बहूद्देशीय हॉल के विकास को सक्षम बनाता है, जिससे इच्छुक एथलीटों के लिए अपने कौशल को सुधारने और खेल जगत में समृद्ध होने के अवसर पैदा होते हैं। इसके अतिरिक्त, यह खेल और शारीरिक गतिविधियों में भागीदारी को प्रोत्साहित करके नागरिकों के बीच एक स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देता है। ये वित्तीय आवंटन खेलों की परिवर्तनकारी शक्ति में सरकार के विश्वास का प्रमाण हैं और अधिक सक्रिय, स्वस्थ और प्रतिस्पर्धी भारत का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

पारुल चौधरी

नशीली दवाओं के सेवन के विरुद्ध उत्प्रेरक के रूप में खेल

युवाओं को खेलों में शामिल करने से महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक लाभ मिलते हैं। साथ ही, यह देश के ग्रामीण हिस्सों में नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ एक शक्तिशाली निवारक के रूप में कार्य करते हैं। इस प्रकार, खेलों में निवेश करने से न केवल कुशल एथलीट तैयार होते हैं बल्कि ज़िम्मेदार, लचीले और नशामुक्त व्यक्तियों का भी विकास होता है, जो समाज में सार्थक योगदान देते हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एशियाई खेल 2022 में भाग लेने वाले भारतीय एथलीटों के दल को संबोधित करते हुए, युवा पीढ़ी पर एथलीटों के प्रभाव को रेखांकित किया और उन्हें अधिक युवाओं के साथ जुड़ कर इस सकारात्मक ऊर्जा का सदुपयोग करने पर ज़ोर दिया। एथलीटों को स्कूलों का दौरा करने और बच्चों के साथ बातचीत करने के अपने सुझाव का स्मरण करते हुए, माननीय प्रधानमंत्री ने ज़ोर देकर कहा कि एथलीटों को युवाओं में नशीली दवाओं की बुराइयों के बारे में जागरूकता बढ़ानी चाहिए कि ये दवाएं कैसे कॅरियर और जीवन को बर्बाद कर सकती हैं। उन्होंने बताया कि देश नशीली दवाओं के विरुद्ध एक निर्णायक युद्ध लड़ रहा है और उन्होंने खिलाड़ियों से कहा कि जब भी उन्हें मौका मिले, वे नशीली दवाओं और हानिकारक औषधि प्रयोग की बुराइयों के बारे में बताएं। उन्होंने युवाओं से नशीली दवाओं के विरुद्ध युद्ध को मज़बूत करने और नशामुक्त भारत के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए आगे आने का आग्रह किया।

खेल कश्मीरी युवाओं के लिए आशा की किरण बनकर उभरे हैं। हाल ही में, *खेलो इंडिया* शीतकालीन खेलों का तीसरा संस्करण कश्मीर घाटी के गुलमर्ग में आयोजित किया गया जिसमें देश के सभी हिस्सों से लगभग 2000 एथलीटों ने भाग लिया। मेज़बान जम्मू-कश्मीर 76 पदकों के साथ समग्र पदक तालिका में शीर्ष पर रहा।

स्थानीय कश्मीरी युवाओं को खेलों में सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए 6.09 करोड़ रुपये की लागत के सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक का जम्मू-कश्मीर के पुलवामा ज़िले के अवंतीपोरा में शिलान्यास किया गया। स्थानीय अधिकारियों के साथ निरंतर प्रयासों और सहयोग के माध्यम से, सरकार का लक्ष्य 'फिट' जीवनशैली को बढ़ावा देकर, स्वस्थ नागरिकों के विकास के लिए एक मजबूत आधार प्रदान कर, युवाओं को सशक्त बनाना है।

भारत को गौरवान्वित करती महिला एथलीट

एशियाई खेल 2022 हमारे देश के लिए ऐतिहासिक रहे हैं- यह एक ऐसा आयोजन था, जिसे हमेशा याद रखा जाएगा। भारत ने एशियाई खेल 2018 की तुलना में 75 प्रतिशत अधिक स्वर्ण पदकों के साथ 60 वर्षों में अपने सर्वोच्च पदक (107) हासिल किए और 16 नई खेल श्रेणियों में पदक हासिल किए जो न केवल हमारी बढ़ती बेंच स्ट्रेंथ बल्कि एक ऐसे मज़बूत खेल पारिस्थितिकी तंत्र, जहां हर स्तर पर सहयोग दिया जा रहा है, के निर्माण का भी प्रमाण हैं। इस टूर्नामेंट में हमारी महिला एथलीटों की उल्लेखनीय उपलब्धि उनके अटूट समर्पण, प्रतिभा और कड़ी मेहनत का प्रमाण हैं जिन्होंने भारतीय दल के कुल पदकों में से लगभग 50% पदक जीते। यह उल्लेखनीय उपलब्धि न केवल मैदान पर उनके कौशल को बल्कि सभी बाधाओं के बावजूद सफल होने की उनकी जीवटता और दृढ़ संकल्प को भी दर्शाती है।

माननीय प्रधानमंत्री ने चीन के हांगझाऊ में एशियाई खेल 2022 में एक बातचीत कार्यक्रम में देश को गौरवान्वित करने वाले भारतीय एथलीटों को संबोधित करते हुए विशेष रूप से कहा, "मुझे इस बात पर भी गर्व है कि हमारी महिलाओं ने इन खेलों में शानदार प्रदर्शन किया है। हमारी महिला खिलाड़ियों ने जिस जज़्बे के साथ प्रदर्शन किया है, वह भारत की बेटियों की क्षमता को दर्शाता है। एशियाई खेलों में भारत ने जो पदक जीते हैं, उनमें से आधे से ज़्यादा हमारी महिला एथलीटों ने जीते हैं। वास्तव में, इस ऐतिहासिक सफलता की शुरुआत हमारी महिला क्रिकेट टीम ने की थी।" इसलिए, यह हमारे देश के लिए गर्व का क्षण है और एक स्पष्ट संकेत है कि खेलों में महिलाओं का योगदान बढ़ रहा है और वे बाधाओं तथा रूढ़ियों को तोड़ रही

रोशिबिना देवी

हैं। ये एथलीट सच्ची चैंपियन हैं और इनकी सफलता से राष्ट्र गौरवान्वित हुआ है।

खेलो इंडिया योजना के अंतर्गत 'स्पोर्ट्स फॉर वीमेन' का लक्ष्य स्वास्थ्य एवं फ़िटनेस के प्रति संपूर्ण नजरिया विकसित करना और इसके ज़रिए महिलाओं में खेलों को बढ़ावा देना है। खेलो इंडिया योजना के इस घटक के तहत 'अस्मिता वीमेंस लीग' एक शानदार पहल है, जिसमें देश भर में विभिन्न खेल स्पर्धाओं की लीग आयोजित की जाती हैं जो भारत की महिला एथलीटों में मज़बूती, दृढ़ संकल्प और उपलब्धि की भावना को बढ़ावा देती हैं। इसका नाम अस्मिता - 'अचीविंग स्पोर्ट्स माइलस्टोन बाई इंस्पायरिंग वीमेन थ्रू एक्शन' (ASMITA) सशक्तीकरण और प्रेरणा का प्रतीक है। ये लीग इन्हीं भावनाओं को महिलाओं में जगाने का प्रयास करती हैं। इन महिला एथलीटों में से एक - रोशिबिना देवी, जो भारत के मणिपुर के बिष्णुपुर ज़िले के एक शांत गाँव क्वाकसिफाई मयई लीकाई में पैदा हुईं, की कहानी दृढ़ संकल्प और उपलब्धि की एक उल्लेखनीय मिसाल है। किसानों के एक सामान्य परिवार में पली-बढ़ी रोशिबिना की मार्शल आर्ट की यात्रा, मणिपुर की समृद्ध मार्शल आर्ट विरासत से प्रेरणा लेते हुए, जल्दी शुरू हुई। पारंपरिक मणिपुरी मार्शल आर्ट 'थांग-ता' से शुरुआत करते हुए, बाद में उन्होंने असाधारण प्रतिभा और अटूट समर्पण का प्रदर्शन करते हुए वुशू की तरफ अपने कदम बढ़ाए।

शुरुआत से ही, वुशू में रोशिबिना की दक्षता स्पष्ट थी, जिसके चलते उन्होंने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पदक जीते। उन्हें पहली सफलता 2018 एशियाई खेलों में मिली, जहां उन्होंने महिलाओं की 60 किग्रा सांडा स्पर्धा में कांस्य पदक जीता। हालाँकि उनकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि 2022 एशियाई खेलों में सामने आई, जहाँ उन्होंने उसी श्रेणी में ऐतिहासिक रजत पदक हासिल किया, जो एशियाई खेलों में वुशु में भारत का पहला रजत पदक था।

मणिपुर की रहने वाली भारतीय खेल प्राधिकरण के राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र की एथलीट रोशिबिना कड़ी मेहनत और जुनून की मिसाल हैं। उनकी प्रेरक यात्रा न केवल उन ऊंचाइयों को दर्शाती है जिस पर समर्पण भाव से पहुँचा जा सकता है, बल्कि सपनों को साकार करने की शक्ति पर भी ज़ोर देती है। अपने एथलेटिक कौशल से परे, रोशिबिना मणिपुर में युवा महिलाओं के लिए एक रोल मॉडल हैं, जो महिला सशक्तीकरण की समर्थक हैं और उन्हें अपनी पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना अपनी आकांक्षाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। वह मैदान और जीवन, दोनों में एक सच्ची चैंपियन की भावना का प्रतीक हैं, जो अपनी दृढ़ता और विजय की उल्लेखनीय कहानी से हम सभी को प्रेरित करती हैं।

निष्कर्ष

खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विभिन्न ग्रामीण एथलीटों और अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में भारत को गौरवान्वित करने वाली महिला एथलीटों की कहानियाँ देश में खेलों की परिवर्तनकारी शक्ति की एक ज्वलंत तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों को बढ़ावा देने पर ध्यान देने से खेल प्रतिभाओं के विकास तथा फिटनेस और प्रतिस्पर्धा की संस्कृति को बढ़ावा मिल रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में खेल के बुनियादी ढांचे के निर्माण और उन्नयन के लिए सरकार की प्रतिबद्धता न केवल एथलीटों को सशक्त बना रही है बल्कि शहरी-ग्रामीण विभाजन को पाटने के साथ-साथ समुदायों के कल्याण को भी बढ़ावा दे रही है। नशीली दवाओं के सेवन के विरुद्ध ये प्रयास महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये ग्रामीण युवाओं को एक रचनात्मक और उद्देश्यपूर्ण मार्ग प्रदान करते हैं, जिससे उनकी ऊर्जा स्वस्थ और अधिक संतुष्टिदायक गतिविधियों की ओर उन्मुख होती है।

इसके अलावा, भारत जब खेलों में अपनी उल्लेखनीय उपलब्धियों का जश्न मना रहा है, ऐसे में उन एथलीटों की प्रेरणादायक यात्रा को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है जो साधारण शुरुआत से सामने आते हैं और वैश्विक मंच पर जीत हासिल करने के लिए बाधाओं को पार करते हैं। ये कहानियाँ हमें याद दिलाती हैं कि प्रतिभा की कोई सीमा नहीं होती और समर्पण तथा जुनून से अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों से भी उबरा जा सकता है। अब जब राष्ट्र एक ऐसा खेल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने का प्रयास कर रहा है जो सभी स्तरों पर एथलीटों को प्रोत्साहित करेगा और सहयोग देगा; यह स्पष्ट है कि भारत का खेल भविष्य आशाजनक है और युवा तेजी से नशीली दवाओं के बजाय खेलों को चुन रहे हैं। सरकार के सहयोग और व्यक्तिगत दृढ़ संकल्प से प्रेरित यह परिवर्तन न केवल अंतरराष्ट्रीय खेल क्षेत्र में भारत की उपस्थिति को मज़बूत करता है बल्कि एक स्वस्थ, अधिक सक्रिय और अधिक एकजुट समाज का भी निर्माण करता है। ❑